इन मार्डन टाइम्स, आदि फिल्में दर्शकों से एक उच्चतर अहसास की माँग करती हैं। पागलखाने के मरीजों और पागलों से लेकर आइंस्टाइन जैसे महान प्रतिभा वाले व्यक्ति भी इनकी हास्य कला के दीवाने हैं। चार्ली चैप्लिन की फिल्मों ने राजा - भिखारी, छोटे - बड़े, अमीर - गरीब, स्त्री - पुरुष, बच्चों - बूढ़े - युवा में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया। इस दृष्टि से उसकी फिल्मों ने फिल्म कला को लोकतांत्रिक बनाकर दर्शकों के बीच बनी सीमाओं को तोड़कर उनमें समता की भावना का प्रचार - प्रसार किया।

Q. लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण किसे कहा और क्यों? गांधी और नेहरू ने भी उनका सान्निध्य क्यों चाहा?

→ चार्ली ने अपने अभिनय से करुणा और हास्य के तत्वों का एक ऐसा अद्भुत सामंजस्य प्रस्तुत किया है जिससे भारतीय कला तथा और संस्कृति को जोड़ा जा सकता है। उसके से प्रेरित होकर राजकपूर ने भारतीय फिल्मों का एक सबसे साहसिक प्रयोग किया। राजकपूर द्वारा अभिनीत फिल्म 'आवारा' अंग्रेजी फिल्म 'दि ट्रैंप' के शब्दानुवाद पर ही आधारित थी। इसी लिए लेखक ने इसी शब्दानुवाद को चार्ली का भारतीयकरण कहा है।

लेखक के मतानुसार समाज में यह तर्क सभी को स्वीकार्य है कि हमारे बीच 'नायक' बहुत कम हैं जबकि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को कभी - न - कभी विदूषक अवश्य समझता है। वास्तव में मनुष्य स्वयं नियति का क्लाउन, विदूषक, जोकर या साइडकिक है। चार्ली ने इस प्रकार के सभी अभिनय एक साथ उतारने का प्रयास किया है। गांधी और नेहरू भी उसके इस अभिनय से प्रभावित थे। इसी लिए उन्होंने भी चार्ली का सान्निध्य चाहा था।

Q. लेखक ने कलाकृति और रस के संदर्भ में किसे श्रेयस्कर माना है और क्यों ? क्या आप कुछ ऐसे उदाहरण दे सकते हैं जहाँ कई रस साथ-साथ उपस्थित हों ?

> लेखक ने कलाकृति और रस के संदर्भ में रस को श्रेयस्कर माना है, क्योंकि जीवन में विषाद और हर्ष तो आते रहते हैं परंतु दोनों परिस्थितियों का एक साथ होना केवल रसों द्वारा ही संभव हो सकता है।
वृद्धावस्था में अर्जुन द्वारा अपने स्वकीय मित्र कृष्ण की पत्नियों को डाकुओं से न बचा पाना और हवा में तीर चलाते रहना ये दोनों ही दृश्य करुण और हास्य रसों को एक साथ उत्पन्न करते हैं।

Q. जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया ?

> चार्ली को अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा। वह एक तलाक शुदा और दूसरे दर्जे की अभिनेत्री का पुत्र था। उसे अपने जीवन में माँ के पागलपन और निर्धनता से निरंतर संघर्ष करना पड़ा। उसे साम्राज्यवाद, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद तथा सामंतशाही समाज से तिरस्कृत होना पड़ा। इन सभी विषम परिस्थितियों से उसे अनेक जीवन मूल्य प्राप्त हुए। अतः हम कह सकते हैं कि इनसे हार न मानने के कारण ही उसे समाज में एक विशिष्ट सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ। जीवन की इन जद्दोजहद ने चार्ली के व्यक्तित्व को संपन्न बनाया।

Q. चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में निहित त्रासदी / करुण / हास्य का सामंजस्य भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र की परिधि में क्यों

Scanned with CamScanner

नहीं आता ?

→ लेखक के मतानुसार भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र में विभिन्न रसों का एक साथ सामंजस्य नहीं हो पाता। 'रामायण' और 'महाभारत' में भी हास्य दूसरों पर है और वह परसंताप से ही प्रेरित है। जो करुणा है, वह अधिकांशत: सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभी दुष्टों के लिए भी है। भारतीय संस्कृत नाटकों के पात्र विदूषक में भी अपने ऊपर हँसने और दूसरों में भी वैसा ही माद्दा पैदा करने की शक्ति कुछ कम ही दिखाई देती है। अत: चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में निहित त्रासदी / करुणा / हास्य का सामंजस्य भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र की परिधि में नहीं आता।